1

एक परिचय (1 पतरस)

1 पतरस में दो आधारभूत विषय हैं। एक तो पतरस उन मसीही लोगों को प्रोत्साहित कर रहा था, जो अपने विश्वास का दाम चुका रहे थे यानी जो कष्ट सह रहे थे। यह स्थायी मुख्य भाग से कभी दूर नहीं है, परन्तु 1:6-9, 3:13-17, 4:12-19 और 5:9, 10 में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। ''सब बातों का अन्त तुरन्त होने वाला है; इसलिए संयमी होकर प्रार्थना के लिए सचेत रहो'' (4:7)। पतरस की इस बात से कि ''तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, ... यीशु मसीह के प्रकट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे'' 1:7 में दोनों विषय एक दूसरे में मिल जाते हैं। पतरस मसीही लोगों को ज़ोर देकर यह याद दिलाते हुए कि प्रभु वापस आएगा और उसके लोग विजयी होंगे, उन्हें कठिनाइयों और कमज़ोरियों का सामना करने का ढंग बता रहा था।

सुसमाचार की पुस्तकों तथा प्रेरितों के काम से हम पतरस से परिचित होते हैं। उसकी बुलाहट की बात को दोहराना या शिष्यता के उसके आरम्भिक ठोकर देने वाले प्रयासों की बात करना अनावश्यक है। (देखें मत्ती 4:18-22; 14:22-33; 16:13-23; 17:1-8; 26:31-46, 69-75.) पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया के आरम्भ के समय और इसके बाद पतरस के नेतृत्व के गुण पता चल गए थे। जब चेलों पर अनिश्चितता पड़ी, जब उनमें फूट पड़ने के कठिन प्रश्न खड़े हुए, तो पतरस एक स्तम्भ यानी शक्ति का गढ़ बन गया। (देखें प्रेरितों 1:15, 16; 2:14-39; 3:1-26; 4:1-22; 9:32-43; 10:1-48.) प्रेरितों के बीच में दी गई पतरस के नेतृत्व की भूमिका से हमें उससे नये नियम में उसके योगदान से अधिक की उम्मीद होगी। पतरस ने पौलुस या यूहन्ना जितना नहीं लिखा, परन्तु इन दो छोटे पत्रों में उसने मसीह और उसके लोगों के बीच के सम्बन्ध की समझ को बताया है, जो कहीं और नहीं मिली।

पतरस ने यह पुस्तक क्यों लिखी? वे मसीही कौन थे, जिनके नाम यह पुस्तक लिखी गई, वे कहां रहते थे और पतरस को उनकी परीक्षाओं का कैसे पता चला? उन्हें यह पत्र लिखने के समय वह कहां था, और किन स्थितियों में रह रहा था? यह पत्र हमारे लिए अपना संदेश खोलकर बताएगा और पतरस के पहली सदी के संसार और उन मसीही लोगों के साथ अपने आपको मिलाकर जिन्हें उसने लिखा हम इसके साहस, आशा और आनन्द में शामिल होंगे।

लिखने का अवसर

प्रेरितों के काम के आरम्भिक अध्यायों के बाद पतरस के प्रचार तथा काम करने की बहुत कम जानकारी है। उसके विषय में बीच-बीच में ही पता चलता है। गलातियों की पुस्तक में अन्ताकिया में उसके होने की बात पौलुस द्वारा (गलातियों 2:11) बताई गई है और ऐसा लगता है कि वह कुरिन्थुस में था (1 कुरिन्थियों 1:12)। हमारे पास सीधी जानकारी बहुत कम है, परन्तु यह स्पष्ट है कि पतरस हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा था। यह हो सकता है, बल्कि इसकी पूरी सम्भावना है कि उसकी मिशनरी यात्राएं भी पौलुस के साथ-साथ ही चल रही थीं। 1 पतरस 1:1

में सम्बोधन की पृष्ठभूमि में विस्तृत मिशनरी प्रयासों के आधार मिल सकते हैं।

स्पष्टतया 60 ईस्वी पूर्व के दशक के मध्य में पतरस और पौलुस दोनों को ज़बर्दस्ती रोम ले जाया गया था। 1 क्लेमैंट के नाम से प्रसिद्ध एक पत्र, जो नब्बे के दशक के मध्य में कुरिन्थुस की कलीसिया के नाम रोम की कलीसिया द्वारा भेजा गया था, सुझाव देता था कि दोनों की मृत्यु रोम में हुई थी। ऐसा लगता है कि पौलुस ने अपना अन्तिम पत्र, 2 तीमुथियुस रोम से ही लिखा। इसके अलावा 1 पतरस 5:13 में बेबिलोन का संकेत नगर के लेखक के विचार पर एक व्याख्या लगती है। जो भी हो, प्रकाशितवाक्य में रोम को बेबिलोन (बाबुल) कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 17:5, 18), एक पुस्तक जो 1 पतरस में सम्बोधित की गई कलीसियाओं में से कुछ के नाम थी। बेबिलोन का हवाला इस परम्परा का समर्थन करता है कि पतरस रोम में था। स्पष्टतया 67 ईस्वी के लगभग वह शहीद हुआ था जिसका अर्थ यह हुआ कि उसका पहला पत्र उसकी मृत्यु से लगभग 2 वर्ष पूर्व लिखा गया होगा। रोम में पर्यटक संसार के सब भागों से आते थे। उनमें से कुछ मसीही थे, जिनसे पतरस को एशिया माइनर की कलीसियाओं की आवश्यकताओं और परीक्षाओं का पता चला। ऐसा प्रतीत होता है कि इससे पत्र के लिखने का अवसर मिल गया।

पाठक तथा उनकी परीक्षाएं

पतरस का पहला पत्र एक विशाल क्षेत्र, जो अवश्य ही एशिया माइनर का पूरा इलाका था, जो सम्भवतया आधुनिक तुर्की है, के नाम लिखा गया। पहली शताब्दी के मध्य में 1 पतरस 1:1 वाले क्षेत्रों-पुंतुस, गलातिया, कपदुकिया, आसिया, और बतुनिया-में से पांच बड़े रोमी इलाके थे। पुंतुस का अधिकतर भाग रोमी विजेता पौंपे द्वारा बतुनिया में मिला लिया गया था। छोटे-छोटे इलाके गलातिया और कपदुकिया में मिला दिए गए थे। पुंतुस-बतुनिया का इलाका काले समुद्र के तट पर एशिया माइनर के उत्तर और पश्चिम तक फैला हुआ था। कपदुकिया बिल्कुल पूर्व में था, जो तुलनात्मक रूप में दूर और दुर्गम था। गलातिया के इलाके में उपमहाद्वीप के मध्य का बड़ा भू-भाग था। आसिया का राज्य इलाके में प्रमुख था, जो पश्चिम में एजियन समुद्र पर बसा और समृद्ध यूनानी नगरों से बड़ा था। यह जानना कठिन है कि 60 ईस्वी के दशक के मध्य तक पुंतुस और कपदुकिया जैसे दूरस्थ इलाकों में कलीसिया कितनी मज़बूत थी, परन्तु दोनों इलाकों के लोग पिन्तेकुस्त के दिन पतरस द्वारा यरूशलेम के दिन वचन सुनाए जाने के समय वहीं थे (प्रेरितों 2:9)।

मसीही लोगों तथा उन बड़े समाजों में जिनमें वे रहते थे, उलझनें बढ़ गई थीं। पतरस ने उनके विश्वास की परीक्षा आग से होने की बात की (1:7) और उनके द्वारा सहे जाने वाले कष्ट को ''दुख रूपी अग्नि'' कहा (4:12)। उसने उनके कष्ट का कारण नहीं बताया। उनमें से कुछ कष्ट हो सकता है कि उन पड़ोसियों द्वारा हुआ हो जो उनका मज़ाक उड़ाते थे और आमतौर पर उनके लिए जीना कठिन कर देते थे। सम्भवतया नये दर्शनों से जुड़ी आम पूर्वधारणा तथा कड़वाहट की तरह मसीही लोगों पर भी अपराध के आरोप लगाए जाकर नगर अधिकारियों के सामने ले जाया जाता था। कइयों को पीटा जाता और कई मार डाले जाते थे। पतरस ने उस उद्धार के महत्व को याद दिलाया जिसका मसीही लोग आनन्द ले रहे थे (1:2, 9)। उन्हें छुड़ाया गया और पवित्र किया गया था (1:15, 16, 18, 23)। यीशु ने वापस आना था (1:7, 13; 4:7)।

वह पीड़ा के बीच में, आनन्द और प्रसन्नता का कारण था (1:8)। सबसे बढ़कर उन्हें और विश्वासियों को उनसे घृणा करने का कोई वास्तविक कारण नहीं देना था (2:12)। उन्हें बुराई के बदले भलाई करते हुए (3:9) पवित्र और भले होना आवश्यक था (2:1, 2)। उन पर होने वाला सताव वास्तव में उनके विश्वास की पुष्टि का और यह गवाही देने का अवसर होना था कि यीशु सारी मनुष्यजाति का उद्धार करता है (1:7)।

1 पतरस की एक रूपरेखा

इस रूपरेखा की समीक्षा करते हुए पत्र के आपस में जुड़े दो विषयों को याद रखें: (1) कष्ट मसीही जीवन का अपेक्षित तत्व है, और (2) प्रभु फिर से अपने लोगों पर दावा करने आ रहा है।

अभिवादन: परमेश्वर के चुने हुओं के नाम पतरस का (1:1, 2)

I. जीवित आशा में आनन्द करो (1:3-12)।
   - क. आशा जीवित है क्योंकि यीशु जीवित है (1:3-5)।
   - ख. सताव के बावजूद आनन्द रहता है (1:6-9)।
   - ग. नबियों की सेवकाई के द्वारा प्रोत्साहन रहता है (1:10-12)।

II. "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं" (1:13-25)।
   - क. पवित्र बच्चों की तरह आज्ञाकारी (1:13-17)।
   - ख. मसीह के लहू से छुड़ाए गए (1:18-21)।
   - ग. अविनाशी बीज से उत्पन्न हुए (1:22-25)।

III. सियोन में रखे पत्थर पर भरोसा रखें (2:1-10)।
   - क. नये जन्मे बच्चों के लिए निर्मल दूध (2:1-3)।
   - ख. मनुष्यों का ठुकराया हुआ, परन्तु परमेश्वर का चुना हुआ पत्थर (2:4-8)।
   - ग. एक राज-पदधारी याजकों का समाज, पवित्र लोग (2:9, 10)।

IV. अधीन बनो और भक्तिपूर्ण जीवन बिताओ (2:11-25)।
   - क. ऐसा भक्तिपूर्ण जीवन बिताओ जिस पर कोई आरोप न लगा सके (2:11, 12)।
   - ख. सही काम करो और अज्ञानी का मुंह बन्द करो (2:13-17)।
   - ग. प्रभु के उदाहरण को देखो (2:18-25)।

V. अपने आपको उचित ढंगों से संवारो और सावधान रहो (3:1-7)।
   - क. भद्र और भले मन वाले की भीतरी सुन्दरता (3:1-4)।
   - ख. कालांतर की परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्रियों का उदाहरण (3:5, 6)।
   - ग. विचार करने और सम्मान की मर्दानगी (3:7)।

VI. हर किसी को जो पूछे उसे समझा दो (3:8-22)।
   - क. अपमानों का उत्तर आशीष के साथ देना (3:8-12)।
   - ख. दुर्भावना का उत्तर अधिकार के लिए जोश के साथ देना (3:13-17)।
   - ग. आरोपों का उत्तर क्रूस के संदेश के साथ देना (3:18-22)।

VII. सब बातों में परमेश्वर को महिमा दो (4:1-11)।

क. मसीह के उद्देश्य के साथ कमर बांध लो (4:1-3)।

ख. फ़िजूल खर्ची के जीवन का त्याग करो (4:4-6)।

ग. समझो कि सब बातों का अन्त निकट है (4:7-11)।

VIII. मसीह के दुखों में सहभागी हो (4:12-19)।

क. कष्ट आने पर चकित न हो (4:12-15)।

ख. उसके नाम की गवाही देने से शर्मिंदा न हो (4:16-18)।

ग. अपने आपको विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ सौंपने से न डरो (4:19)।

IX. दीनता को पहन लो (5:1-11)।

क. साथी एल्डरों को एक अपील (5:1-4)।

ख. चिंताओं को प्रभु पर डालने की अपील (5:5-7)।

ग. भाइयों के साथ खड़े होने की अपील (5:8-11)।

निष्कर्ष: व्यक्तिगत अभिवादन (5:12-14)